RAS MAINS TEST SERIES 2018

PAPER –I GENERAL KNOWLEDGE AND GENERAL STUDIES

Unit-II - **ECONOMICS**

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दें। निम्न प्रश्नों का उत्तर 15-15 शब्दों में दें। प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक निर्धारित है।

1. विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) की अवधारणा समझाइयें ?

उत्तरः– किसी भौगोलिक क्षेत्र विशेष में उत्पादों के विशेष समूह हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की आधारभूत अवसंरचना व विशेष रियायते (कर में छूट, सब्सिडी इत्यादि) देकर उत्पादन व निर्यात को प्रोत्साहित करने की अवधारणा हैं।

2. भुगतान संतुलन (BOP) के असंतुलन की स्थिति में आर.बी.आई. द्वारा किये जाने वाले दो उपाय लिखिए ?

i. नीतिगत दरों में वृद्धि कर आयातों को हतोत्साहित करना।
ii. भारतीय मुद्रा का अवमूल्यन निर्यातों को प्रोत्साहित करना ।

3. व्यापार खाते के घाटे (Trade Account Deficit) के प्रमुख कारण लिखिए ?

i. तेल की कीमतों में वृद्धि व पेट्रोलियम पदार्थों का अत्यधिक आयात।
ii. सोने व पूंजीगत वस्तुओं का अत्यधिक आयात
iii. रूपये का मूल्यह्रास
iv. निर्यात में कमी

4. आउटसोर्सिंग से क्या तात्पर्य हैं ?

उत्तरः– विशेष दक्षता अथवा सस्ती लागत का लाभ उठाने के उद्देश्य से संस्था द्वारा उत्पादन प्रक्रिया के किसी चरण अथवा सम्पूर्ण प्रक्रिया हेतु बाह्य स्त्रोतों को विकसित करना आउटसोर्सिंग हैं। उदाहरणः– बी.पी.ओ., के. पी.ओ.

5. रेमीटेन्स (धन प्रेषण) का भारतीय अर्थव्यवस्था में क्या योगदान हैं ?

उत्तरः– रेमीटेन्स भारतीय अर्थव्यवस्था के विदेशी मुद्रा भण्डार में वृद्धि करती है, वर्तमान में भारत का इस संदर्भ में विश्व में प्रथम स्थान हैं। यह भारत की जी.डी.पी. में आय का महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं।

6. "वर्तमान समय में विदेशी ऋण/सहायता आर्थिक उपनिवेशवाद (Economic colonialism) का माध्यम बन गये हैं।" कथन पर टिप्पणी करते हुए विदेशी ऋणों के दुष्प्रभाव बताइयें ?

उत्तरः– वैश्विक स्तर पर चीन द्वारा अन्य देशों को अत्यधिक ऋण अथवा सहायता प्रदान कर उनकी निर्णय प्रक्रिया व संप्रभुता में हस्तक्षेप एवं परिसम्पत्तियों के अबाध उपयोग का प्रचलन देखा गया है, इस संदर्भ में मालदीव, श्रीलंका, पाकिस्तान के उदाहरण सर्वविदित है। संप्रभुता में हस्तक्षेप के अतिरिक्त विदेशी ऋणों पर निर्भर रहने के कारण अन्य कई दुष्प्रभाव जैसे भुगतान संतुलन का संकट, वैश्विक साख में कमी, मुद्रा के मूल्य में कमी, राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक अस्थिरता, लचर विदेशी व्यापार नीति, महंगाई की समस्या इत्यादि होने की संभावना होती है। अतः विदेशी ऋणों पर निर्भरता को कम करना ही उचित हैं।

7. क्या कारण है कि भारत की जी.डी.पी विकास दर (Growth Rate) अधिक होने के बावजूद बेरोजगारी की समस्या बनी हुई हैं ?

उत्तरः–पिछले कुछ वर्षों में भारत की जी.डी.पी. विकास दर अधिक रहने में मुख्य कारक सेवा क्षेत्र का विकास है। सेवा क्षेत्र में पूरक रोजगारों का तुलनात्मक रूप से कम विकास होता है, अतः रोजगार वृद्धि दर की तुलना में कम सृजित हुए। इसके अतिरिक्त स्वचालित उपकरणों के अधिक प्रयोग में आने, जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि, युवाओं में रोजगारपरक कौशल की कमी व उद्यमशीलता की भावना में कमी होने के कारण भी बेरोजगारी की समस्या बनी हुई हैं।

8. विदेशी निवेश की आवश्यकता का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए ?

सकारात्मक पक्ष	नकारात्मक पक्ष
i. विकास हेतुआधारभूत ढ़ाचे व निवेश की कमी के कारण।	**i.** स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन व उपयोग।
ii. अर्थव्यवस्था के वैश्विक अर्थव्यवस्था से एकीकरण का आधार।	**ii.** विदेशी पूंजी पर अत्यधिक निर्भरता से पूंजी की निकासी के समय अर्थव्यस्था चरमरा जाती हैं।
iii. तकनीकी व प्रबंधकीय दक्षता का विकास।	

iv. अधिक प्रतिस्पर्धा के कारण गुणवत्तापूर्ण उत्पादों व सेवाओं की उपलब्धता।

v. रोजगार के अवसरों में वृद्धि।

vi. मानव संसाधन की दक्षता में वृद्धि व कुशलतम उपयोग।

vii. विदेशी मुद्रा भण्डार की उपलब्धता।

iii. स्थानीय उद्योगों के पास विश्वस्तरीय सुविधाएँ व वित्त की उपलब्धता न होने से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के प्रतिद्वन्द्वी से प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाते है व घरेलू उद्योग नष्ट हो जाता हैं।

iv. लाभ के रूप में पूंजी का पलायन विदेशों में होने से विरोध की भावना।

v. औपनिवेशिक इतिहास के कारण राष्ट्रवाद की भावना के विरूद्ध ।

vi. निर्णयन में हस्तक्षेप की संभावना व महंगाई में वृद्धि की आंशका

निष्कर्षत : वर्तमान के वैश्वीकरण के युग में विकासशील देशों हेतु विदेशी निवेश एक आधारभूत आवश्यकता है एवं एक स्तर तक युक्तियुक्त प्रतिबंधों के साथ इसकी अनुमति दी जाती चाहिए।

सारथि एकेडमी